मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MHD–024

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिंदी)

(एम. एच. डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

एम.एच.डी.-024 : मध्यकालीन कविता-02

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रश्न संख्या **1** अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) काह कामरी पामरी, जाड़ गये से काज।
रहिमन भूख बुझाइए, कैस्यो मिले अनाज॥

(ख) दीरघ दरीनि बसैं, केसवदास केसरी ज्यों,
केसरो कों देखि बनकरी ज्यों कंपत हैं।

बासर की सम्पदा उलूक ज्यों न चितवत

चकवा ज्यों चंद चितै चौगुनो चंपत हैं।

केका सुनि ब्याल ज्यों बिलात जात घनस्याम

घननि की घोरनि जवासे ज्यों तपत हैं।

(ग) वैसे ही चितैकै मेरे चित्त को चुरावती हौ,

बोलती हौ वैसे ही मधुर मृदु बानि सौ;

कवि 'मतिराम' अंक भरत मयंकमुखी,

वैसे ही रहत गहि भुज-लतिकानि सौं।

चूमति कपोल, पान करत अधर-रस,

वैसे ही निहारियत सकल कलानि सौं;

कहा चतुराई ठानियत ? प्रानप्यारो तेरो,

मान जानियत रूखी मुख-मुसकानि सौं॥

(घ) धार में धाय धँसीं निरधार ह्वै, जाय फँसी, उकसीं न उधेरी।

री ! अगराय गिरीं गहिरी, गहि फेरे फिरीं न, घिरीं नहिं घेरी॥

'देव', कछू अपनो वस ना, रस–लालच लाल चितै भईं चेरी।

बेगि ही बूड़ि गई पंखियाँ, अँखियाँ मधु की मखियाँ भईं मेरी॥

2. रीतिकालीन नीति कवियों की चर्चा कीजिए। 10

3. रहीम के काव्य की भाषागत विशेषताओं का विवेचन कीजिए। 10

4. मतिराम के काव्य सौष्ठव पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। 10

5. देव की कविता के अभिव्यंजना–पक्ष का विश्लेषण कीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : $2\times5=10$

(क) रसिकप्रिया

(ख) शिवसिंह सरोज

(ग) मिश्रबंधु विनोद

(घ) रीतिकाल का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

× × × × ×